जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है !

शुध्द चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किये जातें है!

(पांडुशिला, सिंघासन ,छत्र ,चंवर प्रातिहार्य , जापमाला , मंगल कलश,पूजा बर्तन चंदोवा,तोरण,झारी)

नोट :- हमारे यहाँ घरो मे उपयोग हेतु , साधुओं के उपयोग हेतु, अनुष्ठानो मे उपयोग हेतु शुध्द देशी घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है !

Contact:-
Sourabh Sagar Indore
9993602663
7722983010
sourabhjn1989@gmail.com

जैन

जय जिनेन्द्र

गाय का शुद्ध देशी घी

शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानो को ध्यान में
रख कर बनाया गया शुद्ध देशी घी

घी ऐसा के दिल जीत जाये !

अब 1kg की पैकिंग में भी उपलब्ध

संपर्क सूत्र

Contact For Order

Sourabh Sagar Indore

Call & Whatsapp:

9993602663,7722983010

All India Home Delivery

।। श्री अनन्त सिद्धेभ्यो नमः ।।

विशद सिद्ध परमेष्ठी विधान

जाप्य : ॐ ह्रीं अनन्त सिद्धेभ्यो नमः।

aM{`Vm - प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति	-	**विशद सिद्ध परमेष्ठी विधान**
कृतिकार	-	प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक **आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**
संस्करण	-	प्रथम-2013 ● प्रतियाँ :1000
संकलन	-	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोग	-	क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी
संपादन	-	ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी
संयोजन	-	ब्र. किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी ● मो. 9829127533
प्राप्ति स्थल	-	1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा, 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, नेहरू बाजार, जयपुर फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008
		2. श्री राजेशकुमार जैन (ठेकेदार) ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 09414016566
		3. विशद साहित्य केन्द्र C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा ● मो.: 09416882301, 09416888879)
		4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली
		5. जय अरिहन्त ट्रेडर्स (हरीश जैन) 6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली, मो. 9818115971
मूल्य	-	25/- रु. मात्र

-ः अर्थ सौजन्य ः -

श्री विजयकुमार जैन ध.प. श्रीमती भावना जैन

148, बैंक इन्कलेव, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-92

मो. 9990727272, 9990707272

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, 2363339 मो.: 9829050791

अर्चन के सुमन

प्रभु सिद्धों की भक्ति का, मुझे उपहार मिल जाए।
श्रेष्ठ श्रद्धा के फूलों से मेरा, जीवन ये खिल जाए।।
बुझा सद्ज्ञान का दीपक, 'विशद' मेरा है सदियों से।
प्रभु विज्ञान का दीपक, शुभम् अब श्रेष्ठ जल जाए।।

संसार दुःखों का समूह है। दुःखों से बचने के लिए प्राणी हमेशा प्रयत्नशील रहता है। यह प्रयत्न कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल होते हैं। अनुकूल अर्थात् सम्यक् प्रयत्न ही दुःख दूर करने में समर्थ होते हैं। दुःखों का अंतरंगकारण हमारी राग–द्वेष रूप परिणति है एवं बाह्य कारण कर्मोदय है। कर्मोदय के अनुसार अनुकूल–प्रतिकूल निमित्त मिलते रहते हैं और जीव दुःख का वेदन करता रहता है इसलिए कवि ने लिखा है–

संसार में सुख सर्वदा काहूँ को न दीखे।
कोई तन दुखी, कोई मन दुखी, कोई धन दुखी दीखे।।

ऐसी स्थिति में लोगों को जिनधर्म से जुड़कर देव–शास्त्र–गुरु की पूजा, आराधना ही सर्वोपरि है। पुण्य संचय हो और इंसान सुखी और समृद्ध हो एवं सम्यक्त्व को प्राप्त कर परम्परा से रत्नत्रय का आराधन कर मोक्ष प्राप्त कर सके। इस हेतु चिंतन के बिखरे पुष्पों को समेटकर चित्त को चैतन्यता की ओर ले जाने के लिए ज्ञानवारिधि **गुरुवर श्री विशदसागरजी महाराज** ने **'श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान'** के माध्यम से शब्द पुञ्जों को सरल भाषा में संचित किया है। क्योंकि–

पाप और पारा कभी पचता नहीं है, कपूर जलाने पर कुछ बचता नहीं है।
इन्सान को सुख समृद्धि पाने के लिए, भक्ती के अलावा कोई रस्ता नहीं है।।

आचार्यश्री की तपस्तेज सम्पन्न एवं प्रसन्न मुखमुद्रा प्रायः सभी का मन मोह लेती है। आचार्यश्री के कण्ठ में साक्षात् सरस्वती का निवास है। इसे भगवान का वरदान कहें या पूर्व पुण्योदय समझ में नहीं आता। आचार्यश्री को पाकर सारी जैन समाज गौरवान्वित है। आचार्यश्री के द्वारा अब तक 84 विधानों की रचना की जा चुकी है। आचार्यश्री का गुणगान करना तो कदाचित् संभव ही नहीं है। गुरुवर के चरणों में अंतिम यही भावना है कि–

मेरे गुरुवर मेरे दिल में, ज्ञान ज्योति जला देना।
मेरी इस रूह को रबसी, खिलाकर के खिला देना।।
तेरे चरणों की सेवा में, है मेरी आरजू इतनी।
समाधी के समय आकर, मुझे मुझसे मिला देना।।

– ब्र. आरती दीदी (संघस्थ आ. विशदसागरजी महाराज)

''सर्वार्थ सिद्धि व्रत विधि'' (सिद्ध साधन व्रत)

तीन भुवन के मस्तक पर ''ईषत्प्राग्भार'' नाम की आठवीं पृथ्वी है। यह 1 राजू चौड़ी, 7 राजू लम्बी और आठ योजन मोटी है। इस पृथ्वी के मध्य में रजतमयी मनुष्य क्षेत्र के समान पैंतालिस लाख योजन वाली सिद्ध शिला है। इसकी मोटाई मध्य में 8 योजन है। यह भूमि सर्वार्थसिद्धि विमान से 12 योजन अन्तराल छोड़कर सिद्धक्षेत्र हैं। सिद्ध परमात्मा सिद्धालय में विराजमान अनन्तानन्त सुखों का अनुभव करते हुए आत्मा में लीन रहते हैं। सर्वार्थसिद्धि व्रत में कार्तिक सुदी अष्टमी से लगातार आठ दिन उपवास किये जाते हैं तथा कार्तिक सुदी सप्तमी का एकाशन कर मार्गशीर्ष वदी प्रतिपदा को पुनः एकाशन करने का विधान है। इस व्रत में लगातार आठ दिन तक उपवास करना चाहिए। प्रतिदिन श्री जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक पूजन करना चाहिए। यदि उपवास पूर्वक ना कर सकें तो अपनी शक्ति अनुसार व्रत करें। **''श्री सिद्धाय नमः''** मंत्र का जाप करना चाहिए। उद्यापन पर प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित यह **सिद्ध परमेष्ठी विधान** भक्ति भाव से सम्पन्न करना यथायोग्य दान आदि क्रियाएँ सम्पन्न करना चाहिए।

केवलज्ञान प्राप्त करने वाले तीर्थंकर केवली, सामान्य केवली, उपसर्ग केवली, मूककेवली, अन्तःकृत केवली सभी आयु पूर्ण होते ही अष्ट कर्म का विनाश कर सिद्ध बनते हैं, जो सिद्धशिला पर वास करते हैं। सिद्ध पद पाने के भाव से यह व्रत किया जाता है।

इस दुनियाँ के लोग सिंह से भी लड़ने की हिम्मत रखते हैं।
सिंह तो क्या चन्द्र और सूर्य की ओर बढ़ने की हिम्मत रखते हैं।।
यह दुनियाँ भरी हुई है शैतान और हैवानों से मेरे बन्धु।
इन्सान उन्हें कहते हैं जो सिद्धशिला पर चढ़ने की हिम्मत रखते हैं।।

(ॐ ह्रीं श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः।)

– ब्र. आस्था दीदी
(संघस्थ आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र-गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदिक, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नी, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरी का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा– पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख–शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थंकर पद के धनी, पाए गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व–पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा–कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता श्रेष्ठ प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तू पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख–दुख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति अरु धर्मादिक का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा– नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ ! हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्तवन

दोहा– जिन सिद्धों की भक्ति में, रहे हमारा ध्यान।
यही भावना है विशद, शीघ्र होय कल्याण।।

(चौबोला छंद)

हे देवाधिदेव सिद्ध श्री !, हे सर्वज्ञ! त्रिलोकी नाथ।
हे परमेश्वर ! वीतराग श्री, जिन तीर्थंकर के पद माथ।।
हे जिन श्रेष्ठ महानुभाव कई, वर्धमान! स्वामिन् शुभ नाम।
तव चरणों की शरण प्राप्त हो, करते बारंबार प्रणाम।।1।।
जिनने जीते हर्ष द्वेष मद, अरु जीता है ईर्ष्याभाव।
मोह परीषह को भी जीता, अन्तर में जागा समभाव।।
जन्म मरण आदिक रोगों को, जीत लिया है भव का अन्त।
ऐसे श्री जिनदेव हमारे, सदा–सदा होवें जयवन्त।।2।।
तीन लोकवर्ति जीवों के, हितकारक हैं आप महान्।
धर्म चक्ररूपी सूरज हैं, लाल चरण हैं आभावान।।
इन्द्र मुकुट में चूड़ामणि की, किरणों से अति शोभामान।
जयवन्तों श्री जिन सिद्धों को, करते हैं जग का कल्याण।।3।।
तीन लोक के शिखामणि हे, भगवन् ! आपकी जय–जय हो।
तिमिर विनाशक जग के रवि तुम, मोह तिमिर मम् दूर करो।।
अविनाशी शांती हे भगवन् !, हमको आप प्रदान करें।
रक्षक नहीं दूसरा कोई, एक आप कल्याण करें।।4।।
हे स्वामिन्! शुभ भक्ति आपकी, भाव सहित जो करे यथार्थ।
मुख से स्तुति करे आपकी, गुण गाता है जो निःस्वार्थ।।
विनती करने हेतु आपकी, शीश धरे जो हस्त युगल।
धन्य है उसका यह नर जीवन, शीश झुकाए चरण कमल।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

समुच्चय जिन सिद्ध पूजा

(स्थापना)

गुण सम्यक्त्व ज्ञान केवल शुभ, दर्शन अव्याबाध महान्।
अवगाहन सूक्ष्मत्व अगुरुलघु, वीर्य सुगुण पाते भगवान।।
नित्य निरञ्जन सुख अविनाशी, पाने वाले हैं जिन सिद्ध।
आह्वानन् करते हम उर में, सिद्ध शिला पर रहे प्रसिद्ध।।

दोहा– काल अनादि अनंत हैं, सिद्ध अनन्तानन्त।
गुण गाते हम भाव से, पाने भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(उपेन्द्रवज्रा छन्द)

गंगा के जल को प्रासुक कराया, पादाम्बुजों में प्रभु के चढ़ाया।
श्री सिद्ध प्रभु की आज पूजा रचाएँ, पूजा के फल से शिव सौख्य पाएँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि का शुभ चन्दन घिसाये, भवाताप हो नाश तव पद में आये।
श्री सिद्ध प्रभु की आज पूजा रचाएँ, पूजा के फल से शिव सौख्य पाएँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफलों सम ये अक्षत धुवाए, चरणों चढ़ाने को हे नाथ ! लाए।
श्री सिद्ध प्रभु की आज पूजा रचाएँ, पूजा के फल से शिव सौख्य पाएँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित कुसुम श्रेष्ठ चुनकर के लाए, कामारिजय हेतू चरणों चढ़ाए।
श्री सिद्ध प्रभु की आज पूजा रचाएँ, पूजा के फल से शिव सौख्य पाएँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य हमने यह ताजे बनाए, क्षुधा रोग के नाश हेतू चढ़ाए।
श्री सिद्ध प्रभु की आज पूजा रचाएँ, पूजा के फल से शिव सौख्य पाएँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर की ज्योति तम को नशाए, महामोह को नाश श्रद्धा जगाए।
श्री सिद्ध प्रभु की आज पूजा रचाएँ, पूजा के फल से शिव सौख्य पाएँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरू धूप खेने को लाए, कर्मारि का नाश करने हम आए।
श्री सिद्ध प्रभु की आज पूजा रचाएँ, पूजा के फल से शिव सौख्य पाएँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मविध्वंशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम केला श्रीफल मँगाए, महामोक्षफल हेतू पद में चढ़ाए।
श्री सिद्ध प्रभु की आज पूजा रचाएँ, पूजा के फल से शिव सौख्य पाएँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि वसुद्रव्य का अर्घ्य लाए, शाश्वत् सुपद हेतू पद में चढ़ाए।
श्री सिद्ध प्रभु की आज पूजा रचाएँ, पूजा के फल से शिव सौख्य पाएँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जग की शांती हेतु हम, देते शांतीधार।
जिनगुण की अर्चा किए, पाएँ शांति अपार।। शान्तये शांतिधारा

दोहा– पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लेकर श्रेष्ठ प्रसून।
सिद्धों के पद पूजते, नव कोटि त्रिऊन।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– गुण अनन्त का कोष है, ज्ञानी जीव त्रिकाल।
सिद्ध स्वयं हम भी बनें, गाते हैं जयमाल।।

(मानव छंद)

प्रभु तुमने संयम को धार, जगाया अनुपम केवलज्ञान।
अतः इस जग के सारे जीव, आपके करते चरण प्रणाम।।
मोह का तुमने किया विनाश, रखी ना मन में कोई चाह।
बने शिवपथ के राही देव, रही ना तुम्हें कोई परवाह।।1।।

सुतप कीन्हा तुमने अति घोर, किए प्रभु आतम का निज ध्यान।
निर्जरा किए कर्म की आप, किया चेतन गुण का रसपान।।
मोह का करके पूर्ण विनाश, घातिया कर्मों का कर अंत।
प्राप्त कर यथाख्यात् चारित्र, बने केवलज्ञानी भगवंत।।2।।
स्वर्ग से चलकर आए देव, चरण में आके किए प्रणाम।
बनाए समवशरण शुभकार, जरा भी लिए नहीं विश्राम।।
किए प्रभु की जो जय जयकार, सभा में पाए जो स्थान।
तीन गति के आए थे जीव, सभाएँ बारह सजीं महान।।3।।
प्रभु की दिव्य देशना मांहि, रहा तत्त्वों का शुभ विस्तार।
झेलते गणधर चरणों आन, बताते जो भव्यों को सार।।
कहाए प्रभु सर्वज्ञ महान, जयति जय तीर्थंकर भगवान।
तुम्हीं हो अजर अमर अविनाश, करे तव सारा जग गुणगान।।4।।
किए जो दर्श आपके देव, पुण्य का आया उदय महान्।
प्राप्त कर अनन्त चतुष्टय आप, सभी जीवों को देते ज्ञान।।
महापरमेश्वर हे जिनराज !, मिटा दो मेरा अब संताप।
प्राप्त हो आत्म ज्ञान की ऋद्धि, दिशा ऐसी दिखलाओ आप।।5।।
बने प्रभु आप स्वयं ही सिद्ध, किए प्रभु अपने कर्म विनाश।
प्रकट करके निज का स्वरूप, किया तुमने शिवपुर में वास।।
दिखाओ हमको भी हे नाथ !, मोक्ष पद की शुभ अनुपम राह।
मिले हमको शिवपद भगवान, 'विशद' मेरी है अन्तिम चाह।।6।।

दोहा– महिमा श्री जिन सिद्ध की, कहना कठिन महान्।
श्रद्धा से हे नाथ ! यह, किया लघु गुणगान।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सहज शुद्ध चैतन्य प्रभु, सहज गुणों की खान।
यह वर हमको दीजिए, पाएँ शिव सोपान।।

।। इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रथम पूजा

(स्थापना)

चित स्वरूप स्वभाव मग्न जो, चिदानन्द में रहते लीन।
स्वपर प्रकाशी आलोकित हैं, परम सिद्ध रहते स्वाधीन।।
नित्य निरञ्जन अक्षय अनुपम, हैं अखण्ड ज्ञायक भगवान।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, अविनाशी प्रभु हैं गुणखान।।

दोहा– पूजा करके भाव से, करते हम गुणगान।
हृदय कमल में हे प्रभो, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौबोला छन्द)

जल से निर्मल हैं गुण मेरे, जिनकी अब याद सताई है।
निर्मलता उपमातीत अहः, पाने की बारी आई है।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वह सिद्धों का पद पाते हैं।
शिवपथ के राही बन जाते, जो जिनपद शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अब शीतलता की चाह नहीं, निज शीतल गुण प्रगटाएँगे।
हम भाव बनाएँ निर्मलतम, चन्दन यह श्रेष्ठ चढ़ाएँगे।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वह सिद्धों का पद पाते हैं।
शिवपथ के राही बन जाते, जो जिनपद शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखण्ड मेरा स्वरूप, खण्डित ना खंजर कर पाए।
पाने अखण्ड वह पद अनुपम, यह अर्घ्य चढ़ाने हम आए।।

जो अष्ट कर्म का नाश करें, वह सिद्धों का पद पाते हैं।
शिवपथ के राही बन जाते, जो जिनपद शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण से सुरभित है चेतन, रागादि विकार ना रह पाएँ।
वे कामरोग का नाश करें, जो पुष्प ले पूजा को आएँ।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वह सिद्धों का पद पाते हैं।
शिवपथ के राही बन जाते, जो जिनपद शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानामृत रहा सरस व्यंजन, हो तृप्त सदा इससे चेतन।
चेतन में रोग क्षुधादि नहीं, भोजन है मात्र तन का वेतन।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वह सिद्धों का पद पाते हैं।
शिवपथ के राही बन जाते, जो जिनपद शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है कोटि सूर्य से दीप्तिमान, चेतन में ना मिथ्यात्व रहे।
हम दीप जलाते यह पावन, चेतन से ज्ञान की धार बहे।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वह सिद्धों का पद पाते हैं।
शिवपथ के राही बन जाते, जो जिनपद शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन कर्मों से भिन्न रहा, दोनों रहते न्यारे-न्यारे।
ना कर्म नष्ट हो सके पूर्ण, हम धूप जलाकर के हारे।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वह सिद्धों का पद पाते हैं।
शिवपथ के राही बन जाते, जो जिनपद शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसी करनी वैसी भरनी, करनी का फल प्राणी पाते।
जो फल से पूजा करते वह, निश्चित ही शिवपुर को जाते।।

जो अष्ट कर्म का नाश करें, वह सिद्धों का पद पाते हैं।
शिवपथ के राही बन जाते, जो जिनपद शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के गुण निज में रहते हैं, फिर भी उनको विसराए हैं।
पाए अनर्घ्य पद यह प्राणी, जो जिनपद अर्घ्य चढ़ाए हैं।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वह सिद्धों का पद पाते हैं।
शिवपथ के राही बन जाते, जो जिनपद शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई– हम पावन नीर भराए, जलधार कराने लाए।
हो जाए शांति स्थाई, मन में यह मेरे आई।। शान्तये शांतिधारा

चौपाई– सुरभित ये पुष्प मगाएँ, हम पुष्पाञ्जलि को आएँ।
यह जीवन हो सुखकारी, शिवपद पाएँ मनहारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रथम वलयः

दोहा– सिद्ध प्रभू जगपूज्य हैं, महिमा अपरम्पार।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, भाव प्रभू के चार।।

प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

चार भाव के अर्घ्य (सखी छंद)

केवल सम्यक्त्व जगाये, श्री सिद्ध सनातन गाये।
हम पूजा करने आये, चरणों में शीश झुकाये।।
यह भाव प्रभू जी पाते, जो सुखानन्त प्रगटाते।
हम पूजा करते स्वामी, बन जायें शिवपथ गामी।।1।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानसम्यक्त्वभाव प्राप्त श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं केवल ज्ञान प्रकाशी, श्री सिद्ध प्रभु अविनाशी।
जो नित्य निरन्जन गाए, शिवपुर में धाम बनाए।।

यह भाव प्रभू जी पाते, जो सुखानन्त प्रगटाते।
हम पूजा करते स्वामी, बन जायें शिवपथ गामी।।2।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानज्ञानभाव प्राप्त श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु केवलदर्शनधारी, इस जग में मंगलकारी।
जिन लोकालोकप्रकाशी, होते हैं शिवपुरवासी।।
यह भाव प्रभू जी पाते, जो सुखानन्त प्रगटाते।
हम पूजा करते स्वामी, बन जायें शिवपथ गामी।।3।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानदर्शनभाव प्राप्त श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

केवल सिद्धत्व निराले, जड़ता को हरने वाले।
जो शुद्ध बुद्ध गुणधारी, होते हैं नित अविकारी।।
यह भाव प्रभू जी पाते, जो सुखानन्त प्रगटाते।
हम पूजा करते स्वामी, बन जायें शिवपथ गामी।।4।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानसिद्धत्वभाव प्राप्त श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भावों से ही भव बनें, भाव करें भव नाश।
विशद भाव पाके सभी, करते शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं चतुःभावसंयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– सिद्धों की भक्ती करें, जो भी जीव त्रिकाल।
सिद्ध बनें वह जीव सब, गाकर के जयमाल।।

(पञ्च चामर)

मोक्ष महल की पहली सीढ़ी, सम्यक् दर्शन गाया है।
अष्ट अंग से युक्त दोष, पच्चीस रहित बतलाया है।।
देव–शास्त्र–गुरु के प्रति श्रद्धा, सम्यक् दर्शन कहलाए।
वस्तु तत्त्व में श्रद्धा जागे, निश्चय रूप कहा जाए।।1।।

सम्यक् दर्शन युक्त कहा जो, सम्यक् ज्ञान कहा जाए।
पंचभेद अरु अष्ट अंग युत, वस्तु तत्त्व को बतलाए।।
मतिश्रुत अवधि मनःपर्यय युत, केवलज्ञान रूप गाये।
मिथ्या ज्ञान तीन होते हैं, सद् दृष्टी को वह ना भाये।।2।।

सम्यक् दर्शन ज्ञान साथ में, सम्यक् चारित पाते हैं।
सहज ज्ञान के धारी ऋषिवर, मोक्ष महल को जाते हैं।।
तेरह विध चारित्र बताया, धारण करते मुनि अनगार।
पंच महाव्रत समिति गुप्तियाँ, युक्त कहा है अपरम्पार।।3।।

तप के द्वादश भेद कहे हैं, सम्यक् दर्शन युक्त कहा।
बाह्यभ्यन्तर भेद रूप से, संतों के जो मुख्य रहा।।
कर्म निर्जरा का कारण है, संवर करने वाला है।
मुक्ति वधू को वरने हेतू, सुतप श्रेष्ठ वरमाला है।।4।।

सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, सम्यक् तप जो पाते हैं।
वह आराधना करने वाले, स्वयं आराध्य बन जाते हैं।।
सम्यक् आराधना जिन सिद्धों की, भाव सहित जो करते हैं।
अल्प समय में सर्वसौख्य पा, मुक्ति वधू को वरते हैं।।5।।

दोहा– अष्ट कर्म को नाशकर, बनते हैं जिन सिद्ध।
तीन लोक में पूज्य हैं, होते जगत प्रसिद्ध।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अर्चा के शुभ भाव से, झुका रहे हम शीश।
शिवपुर हमको ले चलो, हे त्रिभुवनपति ईश।।

।। इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

द्वितीय पूजा

(स्थापना)

सम्यक्त्वादि गुणानन्त शुभ, धारण करते सिद्ध महान।
सुखानन्त शुभ पाने वाले, होते परम सिद्ध भगवान।।
ज्ञाता दृष्टा सहजानन्दी, कहलाए त्रैलोकी नाथ।
भक्त आपके भक्ति भाव से, सदा झुकाते चरणों माथ।।

दोहा– सर्वश्रेष्ठ प्रभु लोक में, श्रेष्ठ आपका ध्यान।
विशद हृदय में आपका, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(आडिल्य छन्द)

नीर गंगा का शीतल सुगन्धित लिया, छान करके जिसे श्रेष्ठ प्रासुक किया।
सिद्ध की वंदना को यहाँ आये हैं, सिद्ध पद के स्वयं भाव हम भाये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध चंदन घिसाके चरण चर्चते, देह की दाह नाशो प्रभू अर्चते।
सिद्ध की वंदना को यहाँ आये हैं, सिद्ध पद के स्वयं भाव हम भाये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ तन्दुल शशी रश्मि सम श्वेत हैं, चरणों में आके देते सभी ढोक हैं।
सिद्ध की वंदना को यहाँ आये हैं, सिद्ध पद के स्वयं भाव हम भाये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सुरभित कुसुम थाल में भर लिए, जिनप्रभू के चरण आन अर्पित किए।
सिद्ध की वंदना को यहाँ आये हैं, सिद्ध पद के स्वयं भाव हम भाये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ नैवेद्य यह भर लिए थाल में, पूजते आत्मतृप्ति हो तत्काल में।
सिद्ध की वंदना को यहाँ आये हैं, सिद्ध पद के स्वयं भाव हम भाये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप ज्योति लिए आरती के लिए, मोह हर ज्ञान की भारती के लिए।
सिद्ध की वंदना को यहाँ आये हैं, सिद्ध पद के स्वयं भाव हम भाये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घट में शुभम् धूप अनुपम जले, कर्म का नाश हो अन्त मुक्ती मिले।
सिद्ध की वंदना को यहाँ आये हैं, सिद्ध पद के स्वयं भाव हम भाये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ ताजे श्रीफल से पूजा करें, मोक्षफल प्राप्त कर भव की बाधा हरें।
सिद्ध की वंदना को यहाँ आये हैं, सिद्ध पद के स्वयं भाव हम भाये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों का यह अर्घ्य हम लाए हैं, श्रेष्ठ शाश्वत् सुपद प्राप्ति को आए हैं।
सिद्ध की वंदना को यहाँ आये हैं, सिद्ध पद के स्वयं भाव हम भाये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतीधारा दे रहे, शांती पाने नाथ।
मुक्ती पथ में आपका, रहे हमेशा साथ।। शान्तये शांतिधारा

दोहा– पुष्पाञ्जलि करते विशद, चरण कमल में आज।
तव चरणों में आए हम, पाने शिवपद राज।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

द्वितीय वलयः

दोहा– आठ मूलगुण सिद्ध के, जग में मंगलकार।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने शिव दरबार।।

द्वितीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आठ मूलगुणों के अर्घ्य (चाल टप्पा)

चक्षु दर्शनावरण आदि सब, घातक कर्म नशाई।
सकल ज्ञेय युगपद अवलोके, सद् दर्शन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभू को, पूजों रे भाई।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनगुण समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उभय लोक षट् द्रव्य अनंता, युगपद दर्शाई।
निरावरण स्वाधीन अलौकिक, विशद ज्ञान पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभू को, पूजों रे भाई।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुण समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्ट महाबली मोहकर्म का, नाश किए भाई।
निज अनुभव प्रत्यक्ष किए जिन, समकित गुण भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभू को, पूजों रे भाई।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुखगुण समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय कर्मों ने शक्ती, आतम की खोई।
ते सब घात किये जिन स्वामी, बल असीम पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभू को, पूजों रे भाई।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यगुण समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्म के भेद अनेकों, नाश किये भाई।
चित्-स्वरूप चैतन्य जीव ने, सूक्ष्मत्व सुगुण पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभू को, पूजों रे भाई।।5।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुण समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकक्षेत्र अवगाह जीव के, संश्लेष पाई।
निज पर घाती कर्म नशाए, अवगाहन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभू को, पूजों रे भाई।।6।।

ॐ ह्रीं अवगाहनत्वगुण समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँच-नीच पद मैट निरन्तर, निज आतम ध्यायी।
उत्तम अगुरुलघु गुण योगी, स्वगुण प्रगटाई।।

जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभू को, पूजों रे भाई।।7।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वगुण समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य निरंजन भव भय भंजन, शुद्ध रूप ध्यायी।
अव्याबाध गुण प्रकट किए जिन, पूजों हर्षाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभू को, पूजों रे भाई।।8।।

ॐ ह्रीं अव्याबाधत्वगुण समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध प्रभु भाई।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजें हर्षाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभू को, पूजों रे भाई।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टगुण समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– सिद्धों की महिमा अगम, कठिन है जिसका पार।
ध्यान करे जो भाव से, करे आत्म उद्धार।।

(शम्भू छंद)

भगवान आपका द्वार श्रेष्ठ बश, मेरा एक ठिकाना है।
हम भूल गये सारे जग को, जब से तुमको पहिचाना है।।
रंगीन राग जग भोगों को, पाकर के सदा लुभाते हैं।
फिर सूलकर्म के चुभते जब, शांती इस दर पे पाते हैं।।1।।
तुमने जड़ चेतन को जाना, फिर भेद ज्ञान प्रगटाया है।
श्रद्धान ज्ञान चारित पाकर, निज का ही ध्यान लगाया है।।
तप घोर धारकर के तुमने, अपने कर्मों का नाश किया।
चेतन की शक्ति प्रगटाई, निज केवलज्ञान प्रकाश किया।।2।।

सौधर्म इन्द्र की आज्ञा पा धनपति, कुबेर पद में आता।
रत्नों का समवशरण अनुपम, नत हो आकर के बनवाता।।
सौ इन्द्र चरण में आकर के, भक्ती से शीश झुकाते हैं।
हर्षित होकर के इन्द्र सभी, प्रभु की जयकार लगाते हैं।।3।।
सुर-नर पशु आते चरणों में, प्रभु की वाणी सब सुनते हैं।
आध्यात्म सरोवर में मानो, आकर के मोती चुगते हैं।।
हो जाते मालामाल सभी, जो द्वार आपके आते हैं।
लूले लंगड़े बहरे गूंगे, आदिक सौभाग्य जगाते हैं।।4।।
हे नाथ ! आपके दर्शन को, हम नयन बिछाकर बैठे हैं।
जिनने दर्शन पाये तुमरे, उनके सब संकट मैटे हैं।।
भक्तों का प्रभु कल्याण करो, मेरी विनती स्वीकार करो।
जैसे तुम भव से पार हुए, हमको भी भव से पार करो।।5।।
जब तक संसार वास मेरा, तब तक चरणों का साथ मिले।
जब तक श्वाँसे चलती मेरी, तब तक ही आशीर्वाद मिले।।
इस देह की देहरी में स्वामी, अब सम्यक् ज्ञान का दीप जले।
तव नाम जपें निज भावों से, जब तक मेरी यह श्वाँस चले।।6।।
अंतिम इच्छा हे जिन ! पूरी, अब नाथ ! आपको करना है।
खाली झोली लेकर आया, वह पूर्ण आपको भरना है।।
हम रत्नत्रय के रत्न प्रभु, इस दर पर पाने आए हैं।
वह रत्न हमें दो 'विशद' आप, जो रत्न आपने पाए हैं।।7।।

दोहा- निज आतम का बोध हो, रत्नत्रय का ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर हम चले, पाएँ निज कल्याण।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जब तक तन में श्वाँस है, जपें आपका नाम।
सिद्ध प्रभु के चरण में, बारम्बार प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

तृतीय पूजा

(स्थापना)

हे सिद्धशिला के अधिनायक, हे ज्ञान शरीरी सिद्ध जिनेश।
है शौर्य आपका अविनाशी, तीनों लोकों में रहा विशेष।।
हे चिदानन्द आनन्दकन्द, अक्षय अनन्त जग में प्रधान।
हे सर्व चराचर के ज्ञाता, प्रभु कृपा सिन्धु करुणानिधान।।

दोहा- हृदय कमल में आइये, कृपा कीजिए नाथ।
मुक्ती पथ में हे प्रभो !, आप दीजिए साथ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(आडिल्य छन्द)

हम निर्मल जल लेकर आए, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
हे नाथ ! चढ़ाते यहाँ आज, शुचि सरल भावना से भरने।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ ! प्रदान करो।
हे नाथ ! हमारे जीवन की, सारी आकुलता आप हरो।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संताप सताता है भव का, प्रभु पास आपके आए हैं।
तव पद पंकज में अर्चन को, मलयागिरि चंदन लाए हैं।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ ! प्रदान करो।
हे नाथ ! हमारे जीवन की, सारी आकुलता आप हरो।।2।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग का वैभव क्षण भंगुर है, तुमने इसको ठुकराया है।
अक्षय सद् संयम के द्वारा, अनुपम अक्षय पद पाया है।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ ! प्रदान करो।
हे नाथ ! हमारे जीवन की, सारी आकुलता आप हरो।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि कमलों की शोभा से, मानस मधुकर सुख पाते हैं।
निज गुण पाने हे नाथ ! यहाँ, हम अनुपम पुष्प चढ़ाते हैं।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ ! प्रदान करो।
हे नाथ ! हमारे जीवन की, सारी आकुलता आप हरो।।4।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन कई सरस प्रभू हमने, भव-भव में रहकर खाए हैं।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ ! प्रदान करो।
हे नाथ ! हमारे जीवन की, सारी आकुलता आप हरो।।5।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की झिलमिल लड़ियों से, मिट जाए जग का अंधियारा।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, यह दीपक हमने उजयारा।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ ! प्रदान करो।
हे नाथ ! हमारे जीवन की, सारी आकुलता आप हरो।।6।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाने से, सारा नभ मण्डल महकाए।
कर्मों की धूप जलाने को, हे नाथ ! शरण में हम आए।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ ! प्रदान करो।
हे नाथ ! हमारे जीवन की, सारी आकुलता आप हरो।।7।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुकूल ऋतु आ जाने से, उपवन फल से भर जाते हैं।
चिर क्षुधा वेदना नहीं मेरी, हे नाथ ! मिटा वह पाते हैं।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ ! प्रदान करो।
हे नाथ ! हमारे जीवन की, सारी आकुलता आप हरो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्मावरण हटाने को, हे नाथ ! शरण में आए हैं।
शिवपद के राही बनने को, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।

मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ ! प्रदान करो।
हे नाथ ! हमारे जीवन की, सारी आकुलता आप हरो।।9।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- ज्ञान ज्योति से नाश हो, तम का पूर्ण वितान।
शांतीधारा दे रहे, पाने केवल ज्ञान।। शान्तये शांतिधारा

दोहा- युग युग के भव भ्रमण से, पा जाएँ अब त्राण।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने पद निर्वाण।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

तृतीय वलयः

दोहा- क्षेत्रादिक के भेद से, कहे सिद्ध भगवान।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, करते हम गुणगान।।

तृतीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

16 अर्घ्य (शंभू छंद)

भरत क्षेत्र के आर्य खण्ड से, होते जग के प्राणी सिद्ध।
क्षेत्रापेक्षा सिद्ध कहाए, आगम में जो रहे प्रसिद्ध।।
अष्ट कर्म से रहित सिद्ध जिन, की है महिमा अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रे मुक्तिपदप्राप्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐरावत के आर्य खण्ड से, संयम धर के होते मुक्त।
जीव अनन्तानंत वहाँ से, विशद ज्ञान पा हुए विमुक्त।।
अष्ट कर्म से रहित सिद्ध जिन, की है महिमा अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रे मुक्तिपदप्राप्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच विदेहों में विदेह उप, बतलाए हैं एक सौ साठ।
उन क्षेत्रों से जीव जलाते, आप स्वयं कर्मों की काठ।।
अष्ट कर्म से रहित सिद्ध जिन, की है महिमा अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रात् मुक्तिपदप्राप्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्सर्पिणी के चौथे काल में, आत्म ध्यान करते अनगार।
तृतिय पंचम में हो सकते, किसी अपेक्षा कई प्रकार।।
अष्ट कर्म से रहित सिद्ध जिन, की है महिमा अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं उत्सर्पिणीकाले श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवसर्पिणी के चतुर्थ काल में, जीव प्राप्त कर केवलज्ञान।
तृतिय या पंचम में कोई, जीव प्राप्त करते निर्वाण।।
अष्ट कर्म से रहित सिद्ध जिन, की है महिमा अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं अवसर्पिणीकाले श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव गति है द्वार मोक्ष का, मुनि बनकर के करते ध्यान।
इसके पूर्व चारों गतियों से, आके जीव करें कल्याण।।
अष्ट कर्म से रहित सिद्ध जिन, की है महिमा अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं गत्यापेक्षे श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेद रहित नर मुक्ती पाते, भाव वेद त्रय के धारी।
पुल्लिंग द्रव्य वेद को पाकर, होते शिव के अधिकारी।।
अष्ट कर्म से रहित सिद्ध जिन, की है महिमा अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रीं अपगतवेदे श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर बनकर या उनके, काल में पाकर केवल ज्ञान।
मुक्ती कर्म भूमि से पाते, या तीर्थंकर हो विद्यमान।।
अष्ट कर्म से रहित सिद्ध जिन, की है महिमा अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थापेक्षे श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात चारित को पाकर, मुक्ती पाते जिन अरहन्त।
उसके पूर्व सामायिक आदी, चारित्र पाते शिव के कंत।।
अष्ट कर्म का नाश करें जो, हो जाते वह सिद्ध महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं यथाख्यातचारित्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं ज्ञान वैराग्य प्राप्त कर, स्वयं बुद्ध होते जिनदेव।
तीर्थंकर कई अन्य केवली, बनते रहते सिद्ध सदैव।।
अष्ट कर्म का नाश करें जो, हो जाते वह सिद्ध महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।10।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बोधाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परोपदेश पाकर के संयम, धारणकर प्रगटाते ज्ञान।
कर्म नाशकर सिद्धी पाते, बनते गुण रत्नों की खान।।
अष्ट कर्म का नाश करें जो, हो जाते वह सिद्ध महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।11।।

ॐ ह्रीं बोधित बोधाय श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान प्राप्त करके ही, प्राणी पाते हैं शिव धाम।
मतिश्रुत द्वयत्रय चार ज्ञान पा, सिद्ध लोक पाते विश्राम।।
अष्ट कर्म का नाश करें जो, हो जाते वह सिद्ध महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।12।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाप्रेक्षे श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किंचित् न्यून देह अवगाहन, पाकर जाते सिद्धालय।
उत्तम मध्यम जघन्य आदि कई, भेद कहे हैं मंगलमय।।
अष्ट कर्म का नाश करें जो, हो जाते वह सिद्ध महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।13।।

ॐ ह्रीं अवगाहनापेक्षे श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक समय अन्तर जघन्य है, उत्तम छह माह आठ समय।
सिद्धी पाने वाले अन्तर, से कर्मों का करते क्षय।।

अष्ट कर्म का नाश करें जो, हो जाते वह सिद्ध महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।14।।

ॐ ह्रीं अन्तरापेक्षे श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धी पाएँ जीव न्यूनतम, एक अधिकतम एक सौ आठ।
मध्यम के हैं भेद अनेकों, संख्या का यह जानो पाठ।।
अष्ट कर्म का नाश करें जो, हो जाते वह सिद्ध महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।15।।

ॐ ह्रीं संख्यापेक्षे श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक क्षेत्र से अन्य क्षेत्र में, हीनाधिक का कहा कथन।
अल्पबहुत्व कहा वह भाई, आगम से जानो वर्णन।।
अष्ट कर्म का नाश करें जो, हो जाते वह सिद्ध महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम उनका गुणगान।।16।।

ॐ ह्रीं अल्पबहुत्वापेक्षे श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद नहीं सिद्धों में कोई, सिद्धों का सुख एक समान।
भूत प्रज्ञापन नय से वर्णन, किया गया है यहाँ प्रधान।।
अष्ट कर्म से रहित सिद्ध जिन, की है महिमा अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।17।।

ॐ ह्रीं क्षेत्रकालादि अपेक्षे श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– कर्मों ने फैला रखा, जग में भारी जाल।
श्री सिद्ध जिनदेव की, गाते हम जयमाल।।

(चौपाई)

सिद्ध प्रभु हैं भव भयहारी, बने राग तज के अनगारी।
उदय पुण्य पूरब का आया, तुमने तीर्थंकर पद पाया।।
आप भावना सोलह भाए, दर्श विशुद्धी निज में पाए।
श्रेष्ठ गुणों को तुमने पाया, भेद ज्ञान निज में प्रगटाया।।1।।

बने स्वर्ग के तुम अधिकारी, वैभव पाया तुमने भारी।
चयकर मध्य लोक में आए, गर्भ कल्याणक देव मनाए।।
जन्म आपने जिस दिन पाया, इन्द्र सची को साथ में लाया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, भक्ती करके जो हर्षाया।।2।।
राज सुपद भी तुमने पाया, किन्तू नहीं आपको भाया।
वीतराग का पथ अपनाया, केशलुंच कर संयम पाया।।
वस्त्राभूषण सभी उतारे, भेष दिगम्बर मुद्रा धारे।
शिशु सम यथाजात अविकारी, साधु बने जग मंगलकारी।।3।।
नमः सिद्ध बोले जिन स्वामी, मौन हुए फिर अन्तर्यामी।
योगातापन आदिक धारे, कर्म शत्रु तव तुमसे हारे।।
हुई निर्जरा अतिशयकारी, शुक्ल ध्यान पाए शिवकारी।
कर्म घातिया तुमने नाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे।।4।।
प्रभू आप सर्वज्ञ कहाए, अनन्त चतुष्टय तुम प्रगटाए।
दिव्य ध्वनि जग मंगलकारी, सुनी भव्य जीवों ने प्यारी।।
जीव कई सद् दर्शन पाए, ज्ञानाचरण कई अपनाए।
योग निरोध आपने पाया, सिद्ध सुपद क्षण में प्रगटाया।।5।।
यही भाव लेकर हम आए, चरण आपके पूज रचाए।
विनय सुनो मेरी हे स्वामी, हम भी बने मोक्ष पथगामी।।
जिनने सिद्ध सुपद को पाया, उन सबने सिद्धों को ध्याया।
यह सुनकर हम चरणों आए, भक्ति भाव से शीश झुकाए।।6।।

दोहा– ज्ञाता तीनों लोक के, आप कहे भगवान।
अतः आपका हम सदा, करते रहते ध्यान।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– निज आतम का ध्यान कर, कीन्हा ज्ञान प्रकाश।
शिवपद दो हमको 'विशद', पूरी कर दो आश।।

।। इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

चतुर्थ पूजा

(स्थापना)

हे सिद्धशिला के अभिनेता, सर्वज्ञ देव जिनवर ललाम।
हे शांत सनातन वीतराग, अविनाशी हे आनन्द धाम !।।
हे परमातम ! हे शुद्धातम !, होके अमूर्त भी मूर्तिमान।
है विशद हृदय के आसन पर, जिन सिद्ध प्रभु का शुभ आह्वान।।

दोहा– करते हैं हम अर्चना, सिद्ध शिला के ईश।
शिवपद पाएँ हे प्रभो !, झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(जोगीरासा छन्द)

इतना नीर पिया है हमने, तीन लोक भर जाए।
तृप्त नहीं हो पाए अब तक, नीर चढ़ाने लाए।।
अष्ट कर्म का नाश किए जिन, सिद्ध सुपद को पाये।
अतः आपकी पूजा करके, हर्ष–हर्ष गुण गाये।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बार–बार बहु देह धारकर, त्रिभुवन में भटकाए।
चन्दन लेकर नाथ आज, संताप नशाने आए।।
अष्ट कर्म का नाश किए जिन, सिद्ध सुपद को पाये।
अतः आपकी पूजा करके, हर्ष–हर्ष गुण गाये।।2।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह शत्रु ने हमें सताया, आत्म सौख्य न पाए।
अक्षय पद पाने हेतू हम, अक्षय अक्षत लाए।।

अष्ट कर्म का नाश किए जिन, सिद्ध सुपद को पाये।
अतः आपकी पूजा करके, हर्ष–हर्ष गुण गाये।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव के वश में होकर, प्राणी यह भटकाए।
कामजयी हो आप अतः हम, पुष्प चढ़ाने लाए।।
अष्ट कर्म का नाश किए जिन, सिद्ध सुपद को पाये।
अतः आपकी पूजा करके, हर्ष–हर्ष गुण गाये।।4।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादी क्षुधा व्याधि को, नहीं नशा हम पाए।
व्यंजन सरस बनाकर चरणों, आज चढ़ाने लाए।।
अष्ट कर्म का नाश किए जिन, सिद्ध सुपद को पाये।
अतः आपकी पूजा करके, हर्ष–हर्ष गुण गाये।।5।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीप जलाने से तो, जग उजियारा होवे।
सम्यक्ज्ञान विशद जगती से, मोह महातम खोवे।।
अष्ट कर्म का नाश किए जिन, सिद्ध सुपद को पाये।
अतः आपकी पूजा करके, हर्ष–हर्ष गुण गाये।।6।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलाते रहे हमेशा, कर्म नहीं जल पाए।
आठों कर्म जलाने को हम, नाथ ! शरण में आए।।
अष्ट कर्म का नाश किए जिन, सिद्ध सुपद को पाये।
अतः आपकी पूजा करके, हर्ष–हर्ष गुण गाये।।7।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति–भाँति के फल खाकर के, हमने राग बढ़ाया।
चतुर्गती में भ्रमण किया है, मुक्ती फल न पाया।।

अष्ट कर्म का नाश किए जिन, सिद्ध सुपद को पाये।
अतः आपकी पूजा करके, हर्ष-हर्ष गुण गाये।।8।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्यों का मिश्रण करके, हमने अर्घ्य बनाया।
व्यय उत्पाद ध्रौव्य सत् मेरा, निज स्वरूप न पाया।।
अष्ट कर्म का नाश किए जिन, सिद्ध सुपद को पाये।
अतः आपकी पूजा करके, हर्ष-हर्ष गुण गाये।।9।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-शांतीधारा दे रहे, निर्मल जल के साथ।
मुक्ती पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।। शान्तये शांतिधारा

दोहा-कर्म नशाए आपने, हे त्रिभुवनपति ईश।
पुष्पाञ्जलि हम कर रहे, चरण झुकाकर शीश।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

चतुर्थ वलयः

दोहा- रत्नत्रय को धारकर, पाते केवल ज्ञान।
सिद्ध श्री पाने विशद, करते प्रभु का ध्यान।।

चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

32 अर्घ्य (चौबोला छंद)

सिद्ध 'नाम' निक्षेप के द्वारा, कहलाए जो महिमावंत।
गुण अनन्त के धारी जानो, गाये सिद्ध अनन्तानन्त।।
सिद्धों के गुण पाने हेतू, करते हैं हम भी गुणगान।
कर्म नाश मुक्ती तुम पाए, हम भी पाएँ पद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं नामनिक्षेप समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'स्थापना' शुद्ध जीव में, सिद्ध प्रभु की मंगलकार।
अर्चा वन्दन भव्य जीव का, करने वाला है उद्धार।।

सिद्धों के गुण पाने हेतू, करते हैं हम भी गुणगान।
कर्म नाश मुक्ती तुम पाए, हम भी पाएँ पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं स्थापनानिक्षेप समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'द्रव्यापेक्षा' सिद्ध कहाए, केवलज्ञानी जिन अरहंत।
सिद्ध बनेंगे वह भविष्य में, कर्म होयेंगे सारे अंत।।
सिद्धों के गुण पाने हेतू, करते हैं हम भी गुणगान।
कर्म नाश मुक्ती तुम पाए, हम भी पाएँ पद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं द्रव्यापेक्षानिक्षेप समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य सुगुण पर्याय के द्वारा, प्राप्त किए हैं सुपद महान्।
सुखानन्त में लीन निरन्तर, सिद्धालय में हैं भगवान।।
सिद्धों के गुण पाने हेतू, करते हैं हम भी गुणगान।
कर्म नाश मुक्ती तुम पाए, हम भी पाएँ पद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं भावापेक्षानिक्षेप समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभू छंद)

द्वादश तप को तपने वाले, मुनिवर होते हैं अनगार।
कर्म निर्जरा करके अपने, कर देते कर्मों को क्षार।।
सिद्धालय में जाने वाले, अतः कहे जाते 'तप' सिद्ध।
भाव सहित हम पूजा करते, परमेष्ठी जो रहे प्रसिद्ध।।5।।

ॐ ह्रीं तप श्री सिद्ध परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चय से सब जीव शुद्ध हैं, पूर्ण शुद्ध हैं सिद्ध महान्।
द्रव्य सुगुण पर्याय दृष्टि से, सिद्ध कहे जाते भगवान।।
सिद्धालय में जाने वाले, अतः कहे जाते 'नय' सिद्ध।
भाव सहित हम पूजा करते, परमेष्ठी जो रहे प्रसिद्ध।।6।।

ॐ ह्रीं नय श्री सिद्ध परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच स्थावर त्रस जीवों की, हिंसा का करते परिहार।
पञ्चेन्द्रिय मन के विजयी मुनि, संयम धारें अपरम्पार।।

तीन लोकवर्ति जीवों से, पूज्य कहे हैं 'संयम' सिद्ध।
भाव सहित हम पूजा करते, परमेष्ठी जो रहे प्रसिद्ध ।।7 ।।

ॐ ह्रीं संयम श्री सिद्ध परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसादिक पापों को तजकर, चारित पाले पंच प्रकार।
निश्चय अरु व्यवहार चरित का, पालन करते भली प्रकार ।।
भेद ज्ञान प्रगटाने वाले, कहे लोक में 'चारित' सिद्ध।
भाव सहित हम पूजा करते, परमेष्ठी जो रहे प्रसिद्ध ।।8 ।।

ॐ ह्रीं चारित्र श्री सिद्ध परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन से जो सिद्ध कहाए, सम्यक् दर्शन के आधार।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाएँ, हम भी नाथ आपके द्वार ।।
सिद्धालय में जाने वाले, कहे गये हैं 'दर्शन' सिद्ध।
भाव सहित हम पूजा करते, परमेष्ठी जो रहे प्रसिद्ध ।।9 ।।

ॐ ह्रीं दर्शन श्री सिद्ध परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान सिद्ध की महिमा अनुपम, पाने वाले क्षायिक ज्ञान।
लोकालोकवर्ति द्रव्यों का, एक साथ हो जिनको भान ।।
सिद्धालय में जाने वाले, कहे गये प्रभु ज्ञान सुसिद्ध।
भाव सहित हम पूजा करते, परमेष्ठी जो रहे प्रसिद्ध ।।10 ।।

ॐ ह्रीं ज्ञान श्री सिद्ध परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

बने 'तीर्थंकर केवली', कर्म नाशकर सिद्ध।
सभी जीव पूजा करें, जग में प्रभू प्रसिद्ध ।।11 ।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरकेवली सिद्धपद प्राप्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सामान्य केवली' भी स्वयं, करके कर्म विनाश।
सिद्धशिला पर जो किए, जाके स्वयं निवास ।।12 ।।

ॐ ह्रीं सामान्यकेवली सिद्धपद प्राप्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'समुद्घात' जिन केवली, पाये मोक्ष निधान।
सिद्धों की अर्चा किए, होते सिद्ध समान ।।13 ।।

ॐ ह्रीं समुद्घातकेवली सिद्धपद प्राप्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उपसर्गों' को झेलकर, किए आत्म का ध्यान।
केवलज्ञानी बन स्वयं, पाए सुपद निर्वाण ।।14 ।।

ॐ ह्रीं उपसर्गकेवली सिद्धपद प्राप्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मूककेवली' की रही, महिमा अपरम्पार।
बिन बोले भव सिन्धु से, हो जाते भव पार ।।15 ।।

ॐ ह्रीं मूककेवली सिद्धपद प्राप्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर्मुहूर्त में ज्ञान पा, होते सिद्ध महान।
सुखानन्त पाते प्रभू, गुणानन्त की खान ।।16 ।।

ॐ ह्रीं अन्तःकृतकेवली सिद्धपद प्राप्त श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभू छंद)

शील झील में अवगाहन कर 'शीलेश्वर' बन गये महान्।
कर्मशत्रु चरणों में आके, तीन लोक के झुके प्रधान ।।
सिद्ध सुपद को पाने वाले, कहलाए त्रैलोकी नाथ।
चरणों में हम अर्चा करते, सादर झुका रहे हैं माथ ।।17 ।।

ॐ ह्रीं शीलगुणधारक श्री शीलेश्वराय नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के प्राणी जिनको, करते हैं सादर वंदन।
'अखिलेश्वर' हे नाथ ! आपके, चरणों हम करते अर्चन ।।
सिद्ध सुपद को पाने वाले, कहलाए त्रैलोकी नाथ।
चरणों में हम अर्चा करते, सादर झुका रहे हैं माथ ।।18 ।।

ॐ ह्रीं अखिलगुणप्राप्त श्री अखिलेश्वराय नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम पूज्यता पाने वाले 'परमेश्वर' तव चरण प्रणाम।
अशरीरी होकर के जिनने, सिद्धशिला पर पाया धाम ।।
सिद्ध सुपद को पाने वाले, कहलाए त्रैलोकी नाथ।
चरणों में हम अर्चा करते, सादर झुका रहे हैं माथ ।।19 ।।

ॐ ह्रीं परमगुणप्राप्त श्री परमेश्वराय नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल गुणों के धारी भगवन्, कहलाते हैं 'विमलेश्वर'।
भव्यों पर करुणा बरसाने, वाले आप श्रेष्ठ निर्झर।।
सिद्ध सुपद को पाने वाले, कहलाए त्रैलोकी नाथ।
चरणों में हम अर्चा करते, सादर झुका रहे हैं माथ।।20।।

ॐ ह्रीं विमलगुणप्राप्त श्री विमलेश्वराय नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश्वर नहीं है जिनका कोई, प्रभू 'अनीश्वर' जगत महान्।
निज स्वरूप को प्रगटाए जो, करके निज आतम का ध्यान।।
सिद्ध सुपद को पाने वाले, कहलाए त्रैलोकी नाथ।
चरणों में हम अर्चा करते, सादर झुका रहे हैं माथ।।21।।

ॐ ह्रीं अनीश्वरगुणप्राप्त श्री अनीश्वराय नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक प्रकाशक हे प्रभु, 'सर्वदर्शि' कहलाते आप।
पाप नाश हो जाते उनके, करते हैं जो प्रभु का जाप।।
सिद्ध सुपद को पाने वाले, कहलाए त्रैलोकी नाथ।
चरणों में हम अर्चा करते, सादर झुका रहे हैं माथ।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वदर्शिगुणप्राप्त श्री सर्वदर्शि नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वचराचर के ज्ञाता प्रभु, जो कहलाते हैं 'सर्वज्ञ'।
ध्यान जाप स्मरण किए नर, ज्ञानी होते जो हैं अज्ञ।।
सिद्ध सुपद को पाने वाले, कहलाए त्रैलोकी नाथ।
चरणों में हम अर्चा करते, सादर झुका रहे हैं माथ।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञगुणप्राप्त श्री सर्वज्ञाय नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नोकर्म रहित प्रभु, कहलाते हैं जो 'निष्कर्म'।
आत्म ध्यान के द्वारा जिनने, प्रगटाया है निज का धर्म।।
सिद्ध सुपद को पाने वाले, कहलाए त्रैलोकी नाथ।
चरणों में हम अर्चा करते, सादर झुका रहे हैं माथ।।24।।

ॐ ह्रीं निष्कर्मगुणप्राप्त श्री निष्कर्माय नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं आप सम जग में कोई, प्रभु 'लोकोत्तर' रहे विशेष।
कर्म घातिया नाश करें वह, बनते जग में सिद्ध जिनेश।।
सिद्ध सुपद को पाने वाले, कहलाए त्रैलोकी नाथ।
चरणों में हम अर्चा करते, सादर झुका रहे हैं माथ।।25।।

ॐ ह्रीं प्रभुलोकोत्तरगुणप्राप्त श्री प्रभुलोकोत्तराय नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोक दिखाने वाला, पाया जिनने केवलज्ञान।
'लोकचक्षु' कहलाने वाले, कहलाते अर्हत् भगवान।।
सिद्ध सुपद को पाने वाले, कहलाए त्रैलोकी नाथ।
चरणों में हम अर्चा करते, सादर झुका रहे हैं माथ।।26।।

ॐ ह्रीं लोकचक्षुगुणप्राप्त श्री लोकचक्षु नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छंद)

प्रभु आतम ज्योति जगाए, फिर 'विश्व ज्योति' कहलाए।
हम सिद्ध प्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।27।।

ॐ ह्रीं विश्वगुणप्राप्त श्री विश्वज्योति नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'निराकार' जिनस्वामी, इस जग के अन्तर्यामी।
हम सिद्ध प्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।28।।

ॐ ह्रीं निराकारगुणप्राप्त श्री निराकाराय नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व का आश्रय जो पाए, प्रभु 'स्वाश्रित' आप कहाए।
हम सिद्ध प्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।29।।

ॐ ह्रीं स्वाश्रितगुणप्राप्त श्री स्वाश्रिताय नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सारे द्वन्द नशाए, 'निर्द्वन्द' आप कहलाए।
हम सिद्ध प्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।30।।

ॐ ह्रीं निर्द्वन्दगुणप्राप्त श्री निर्द्वन्दा नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो रहे श्रेय के दाता, जिन 'श्रेयोनिधी' विधाता।
हम सिद्ध प्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।31।।

ॐ ह्रीं श्रेयोनिधीगुणप्राप्त श्री श्रेयोनिधी नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्द मग्न हैं स्वामी, प्रभु 'चिदानन्द' शिवगामी।
हम सिद्ध प्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।32।।

ॐ ह्रीं चिदानन्दगुणप्राप्त श्री चिदानन्दाय नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु निक्षेप सुतप नय दर्शन, ज्ञान चरित से सिद्ध कहे।
यथा नाम गुण के धारी प्रभु, तीन लोक में शोभ रहे।।
सिद्धशिला पर काल अनादी, रहे अनन्तानंत सुसिद्ध।
भाव सहित हम पूजा करते, परमेष्ठी जो रहे प्रसिद्ध ।।33।।

ॐ ह्रीं निक्षेप, नय, नाम आदि समन्वित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– महिमा गाने सिद्ध की, आज हुए वाचाल।
विशद भाव से हम यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(मोतियादाम छंद)

त्रैलोक हिंतकर धर्म प्रधान, धरे सदृष्टि जीव महान्।
करें निज दर्शन की पहिचान, तवै हो जीवों को निज भान।।
करें जब प्राणी पुण्य विशाल, सुपद पाएँ तब पूज्य त्रिकाल।
तजें प्रभु जी जब स्वर्ग विमान, तवै हो प्रभु का गर्भकल्याण ।।1।।
करें रत्नों की वृष्टि महान्, स्वर्ग से आके देव प्रधान।
प्रभु जन्मे तव सुरपति आय, ऐरावत साथ में अपने ल्याय।।
शचि शिशु को फिर लेकर आय, सुरेन्द्र तवै प्रभु दर्शन पाय।
तवै सुर मेरुगिरि ले जाय, खुशी हो प्रभु का न्हवन कराय ।।2।।
तवै वह पितु के घर पहुँचाय, हृदय से भारी हर्ष मनाय।
प्रभू कई पाएँ भोग विलास, तजैं फिर भोगन की जो आस।।
किए प्रभु जी चउ कर्म विनाश, लिए तब केवलज्ञान प्रकाश।
तवै फिर आयें इन्द्र अपार, किए प्रभु की तब जय–जयकार ।।3।।
समवशरण की रचना सुप्रधान, कुबेर जो कीन्हें श्रेष्ठ महान्।
खिरी ध्वनि प्रभु की अपरम्पार, किए प्रभु तत्त्वों का विस्तार।।

जगे कई जीवन में श्रद्धान, जगाएँ वह सब सम्यक् ज्ञान।
सु सम्यक् चारित्र का स्वरूप, रत्नत्रय पाएँ भव्य अनूप ।।4।।
करें प्रभु जी फिर ध्यान विशेष, नशाएँ क्षण में कर्म अशेष।
'विशद' हम जपते तव गुण सार, प्रभु हमको भवसागर तार।।
बनें शरणागत दीन दयाल, करी तव चरणों में गुणमाल।
जगी है मन में मेरे आस, मिले हमको भी शिवपुर वाश ।।5।।

(घत्ता छंद)

जय–जय जिन स्वामी, त्रिभुवन नामी, जन्म–मृत्यु का रोग हरो।
मुक्ती पथगामी, शिव अनुगामी, हमको भी भवपार करो।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सिद्धों की पद वंदना, जो करते धर ध्यान।
'विशद' ज्ञान पाके शुभम्, पाएँ पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जाप्य– ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्त परम सिद्धेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– सिद्ध प्रभु की प्रभा से, झलके लोकालोक।
चरण वन्दन जो करें, मिटे क्लेश दुख शोक।।

(पञ्च चामर)

हम प्रभु सिद्ध की शरण पाए अहा, केवली कथित जिन धर्म पावन कहा।
श्रेष्ठ आनन्द मय जो बताया परम, देव अर्हन्त हैं सत्य शिव सुन्दरम्।।
जग भ्रमण करके पाया तुम्हें हे प्रभु, मोह मिथ्यात्व हर आज ध्याया विभू।
हो गया आज विश्वास हम सिद्ध हैं, किन्तु कर्मों के द्वारा अभी विद्ध हैं।।
द्रव्य भाव नो कर्मों से हम हीन हैं, कर्म भी आत्मा के ही आधीन हैं।
किन्तु कर्तत्व बुद्धि में हम जी रहे, स्वजन परिजन को भी हम अपना कहे।।

पाप को जानकर हीन छोड़ा सदा, पुण्य को मानकर श्रेष्ठ जोड़ा सदा।
भिन्न इसने रहा धर्म जाना नहीं, चार गतियों में भटके ना पाया कहीं।।
निज को देखा नहीं बाह्य दृष्टी बने, बन्ध कीन्हे अतः कर्म हमने घने।
हे प्रभो ! आपका आज दर्शन मिला, जागे सौभाग्य जो ज्ञान का रवि खिला।।
तत्त्व का ज्ञान पाएँ प्रभु आपसे, छूट जाएँ जहाँ के सभी पाप से।
भावना है यही दर्श सम्यक् जगे, ज्ञान-चारित्र में अब मेरा मन लगे।।
कर्म रज पूर्णतः शीघ्र ही नाश हो, आपके पास में मेरा भी वास हो।
नमन हो नमन हो सिद्ध प्रभु जिनवरम्, साक्षात् विद्यमान नमो सिद्धेश्वरम्।।
हो गया स्वच्छ मेरा ये मन मंदिरम्, आइये विराजिए हे प्रभो ! जिनवरम्।
शुद्ध अरहंत भगवन्त ज्ञानेश्वरम्, ज्ञान ज्ञायक स्वरूपी हे अखिलेश्वरम्।।

दोहा- वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, ज्ञान ध्यान सुख लीन।
तव पूजा करके विशद, हो जाएँ स्वाधीन।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सहज शुद्ध चैतन्य प्रभु, सहज गुणों की खान।
यह वर हमको दीजिए, पाएँ शिव सोपान।।

।। इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रशस्ति

स्वस्ति श्री वीर निर्वाण सम्वत् 2539 विक्रम सम्वत् 2070 मासोत्तमेमासे शुभे मासे अषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे शुभ तिथि एकम् मंगलवासरे श्री कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कारगणे सेनगच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्या जातास्तत् शिष्य विमलसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः भरतसागराचार्या विरागसागराचार्या ततशिष्यः विशदसागराचार्य कर-कमले श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान लिख्यते इति शुभं भूयात्।

आरती

तर्ज : भक्ति बेकरार है...

सिद्धों का दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
पुण्य सुअवसर आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है।।
ज्ञान दर्शनावरण आदि सब, प्रभु ने कर्म नशाए जी-2
लोकालोक प्रकाशित अनुपम, केवल ज्ञान जगाए जी-2......
अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध प्रभु अविकारी हैं-2
भव्यों को सौभाग्य प्रदायक, जग में मंगलकारी हैं-2......
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सुख अनन्त के कोष कहे-2
नित्य निरंजन हैं अविकारी, पूर्ण रूप निर्दोष रहे-2......
पर्व अठाई में मैना ने, सिद्धों का गुणगान किया-2
पूजा भक्ति अर्चा करके, यथा योग्य सम्मान किया-2......
सिद्ध चक्र की पूजा करके, गंधोदक छिड़काया था-2
कोढ़ रोग से श्रीपाल ने, छुटकारा तब पाया था-2......
जागे हैं सौभाग्य हमारे, हमको यह सौभाग्य मिला-2
देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, श्रद्धा का शुभ फूल खिला-2......
सिद्धों के गुण गाने वाले, सिद्धों के गुण पाते हैं-2
कर्म नाशकर अपने सारे, 'विशद' सिद्ध हो जाते हैं-2......

***

आचरण हैवान को, इंसान बना देता है।
माली वीरान को, गुलिस्तान बना देता है।।
मैं अपनी कहता हूँ, दूसरों की नहीं।
त्याग इंसान को, भगवान बना देता है।।

- मुनि विशालसागर

सिद्धचक्र चालीसा

दोहा- रत्नत्रय से शोभते, पञ्च गुरू शिवधाम।
करते पूजा अर्चना, करके विशद प्रणाम।।
चालीसा जिन सिद्ध का, गाते हम शुभकार।
वन्दन करते भाव से, पद में बारम्बार।।

(चौपाई)

जय-जय परम सिद्ध शुभकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
सिद्ध सनातन शुभ कहलाए, अपने सारे कर्म नशाए।।
पुरुषाकार लोक है भाई, उस पर सिद्ध शिला बतलाई।
ईशत् प्राग्भार शुभ जानो, अष्टम पृथ्वी जिसको मानो।।
ज्ञान शरीरी जो कहलाए, प्रभु निकल परमातम गाए।
ज्योति पुञ्ज अरूपी जानो, ज्ञानादर्श स्वरूपी मानो।।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य कहाए, चमत्कार चित् चेतन पाए।
नित्य निरंजन गुण प्रगटाए, मुक्तिश्री के स्वामी गाए।।
ज्ञानावरणी कर्म नशाए, ज्ञान अनन्त प्रभू प्रगटाए।
कर्म दर्शनावरणी नाशे, दर्श अनन्त प्रभू परकाशे।।
मोह कर्म को आप नशाया, गुण सम्यक्त्व श्रेष्ठ प्रगटाया।
अन्तराय नाशे जिन स्वामी, बल अनन्त पाये शिवगामी।।
वेदनीय कर्मों के नाशी, अव्यावाध सुगुण की राशि।
आयु कर्म नशाने वाले, अवगाहन गुण पाने वाले।।
नाम कर्म भी रह ना पाया, गुण सूक्ष्मत्व श्रेष्ठ प्रगटाया।
गोत्र कर्म के नाशी जानो, अगुरुलघु गुण जिनका मानो।।
गुण सहस्र तुमने प्रगटाए, सहस्रनाम धारी कहलाए।
पार नहीं महिमा का पावे, चाहे वृहस्पति भी आ जावे।।
इन्द्र नरेन्द्र सभी गुण गाते, फिर भी महिमा न कह पाते।
भक्ति से हमने गुण गाया, पद में सादर शीश झुकाया।।

विशद भावना हमने भाई, प्राप्त हमें हो प्रभु प्रभुताई।
सिद्ध प्रभू महिमा के धारी, जिन सर्वज्ञ कहे शुभकारी।।
महा मोहतम नाशन हारी, निर्विकल्प आनन्दाविकारी।
कर्म त्रिविध से रहित कहाए, निजानन्द सुखकारी गाये।।
संशयादि सारे भ्रमहारी, जन्म-जरादिक रोग निवारी।
युगपद सकल लोक के ज्ञाता, अनुपम विधि के श्रेष्ठ विधाता।।
निरावरण निर्मल अनगारी, निरूपाधि चेतन गुणधारी।
दुर्निवार निर्द्वन्द स्वरूपी, निर आश्रय निरमय चिद्रूपी।।
करण भेद रत्नत्रय धारी, भेदाभेद रूप शुभकारी।
सब विकल्प तज भेद स्वरूपी, निज अनुभूति मगन अनरूपी।।
अजर अमर अविकल अविनाशी, निराकार निज ज्ञान प्रकाशी।।
दोष अठारह रहित कहाए, ज्ञान शरीरी अविचल गाए।
पावन वीतरागता धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय सब पाए, निज में सारे सुगुण समाए।
गुण अनन्त के हैं जो स्वामी, आप कहाए अन्तर्यामी।।
सिद्ध सनातन तुम कहलाते, तीन लोक में पूजे जाते।
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।
पञ्चम भाव आपने पाया, पञ्चम गति में धाम बनाया।
श्री के धारी आप कहाए, हो कृतकृत्य सत्य शिव पाए।।
कहलाए प्रभु त्रिभुवन नामी, भव्य जीव हैं तव अनुगामी।
चरण आपके 'विशद' नमामी, ज्ञानी जन करते प्रणमामी।।

दोहा- विघ्न हरण मंगल करण, सदा रहो जयवंत।
विघ्न रोग दुर्भाग्य का, होवे क्षण में अन्त।।
चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
वह कर्मों का नाशकर, बने श्री का नाथ।।

***

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंङ्क
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्व.स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा– विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वच-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बसंत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर